डॉ0 राममनोहर लोहिया के विचारों की सार्थकता

डॉ0 वीरेन्द सिंह यादव,
एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य पर लोहिया के विचारों की उपादेयता भी कुछ कम नहीं है। उपभोक्तावाद व आर्थिक बाजारवाद के इस युग में जब मँहगाई व आर्थिक संकट से राष्ट्र जूझ रहा है तो डॉ0 लोहिया का 'दम–बाँधो' सिद्धान्त इस निराकरण का सटीक प्रतीत होता है। भारतीय राजनीति में बढ़ते जातिवादी असर की तोड़ हमें लोहिया के 'जाति तोड़ो' में दिखता है तो भारतीय भाषाओं के पतन के इस दौर में डॉ0 लोहिया का 'अंग्रेजी हटाओ' और सीमापार से बढ़ते हिंसात्मक हमलों व आतंकवादी भय के माहौल तथा असुरक्षित सीमाओं के मद्देनजर डॉ0 लोहिया का 'हिमालय बचाओ' मिशनपूर्व की अपेक्षा इस समय अधिक प्रासंगिक लगता है।

भले ही आज हमने प्रजातांत्रिक प्रणाली के 70 वर्ष पूरे कर लिए हैं किन्तु उसकी विसंगतियाँ हमारे सामने स्पष्ट हैं। डॉ0 राम मनोहर लोहिया के अनुसार समाजवादी का मतलब होता है जो निजी सम्पत्ति को बढ़ाने के बजाय सामूहिक या मुल्क की सम्पत्ति को बढ़ाने की बात सोचे और करे। क्या आज के परिप्रेक्ष्य में जब खर्चीली व्यवस्था, राजनेताओं के मुगलिया ठाठ वाठ, अपराधियों का संसद में पहुँचना, अर्थ का वर्चस्व, भ्रष्टाचार और घोटाला, कालाधन, अमीरी–गरीबी का अनुपात दिनो–दिन बढ़ता जा रहा है । यह निश्चित रूप से चिन्ता और चिन्तन का का विषय है। इस दृष्टि से डॉ0 लोहिया का जीवन दर्शन आज अधिक प्रासंगिक हो जाता है। राजनेताओं को उनके जीवन से प्रेरणा और प्रोत्साहन लेना चाहिए। इससे देश की अखण्डता, एकता सुरक्षित रहेगी। समाज में संतुलन सामंजस्य और समता बढ़ेगी। क्षेत्र, क्षेत्रीयता, वर्ग धर्म, जाति, वंश, आदि की बढ़ती हुई प्रवृत्ति पर रोक लगेगी। डॉ0 लोहिया की विचारधारा को हम अपने व्यक्तिगत, सार्वजनिक और राष्ट्रीय जीवन में आत्मसात् करें। यही उनके प्रति हमारी उचित श्रद्धांजलि होगी।

डॉ0 लोहिया ने केवल अपने देश को ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के समाजवाद को एक नई अस्मिता और हस्ती, आत्म विश्वास व सम्यक् मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान किया था। डॉ0 लोहिया के समाजवाद के नवदर्शन में प्रेम, क्रोध, हमदर्दी, घृणा, बुद्धि और भावना का सम्यक संतुलन विद्यमान था। डॉ0 लोहिया का मानना था कि यदि हम इतिहास से प्रेरणा ग्रहण कर एक ऐसी विश्व सम्यता का निर्माण कर सकेंगे जो वर्ग और वर्ण के बदलाव से विकास और ह्रास से और भौगोलिक स्थानांतरण से मुक्त हो, जो विश्व सभ्यता हो, वर्ग और वर्ण से रहित व्यक्ति और समाज के बहुमुखी विकास में सक्षम हो, तभी मानव अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। लोहिया ने अनेक बार यह प्रयास किया था कि हिन्दुस्तान का समाजवादी आन्दोलन सैद्धान्तिक और राजनीतिक दल से निकलकर सिद्धान्त निष्ठ, कर्मठ और गतिशील बने। अन्ततः इस प्रयास में उन्हें 'एकला चलो रे', का मार्ग ही अपनाना पड़ा। डॉ0 लोहिया आजीवन क्रांतिकारियों की तरह अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाते रहे। जो संघर्ष उन्होंने दृढतापूर्वक प्रारम्भ किया था उससे उन्होंने कभी मुंह नहीं मोड़ा। उनमें बुद्ध जैसी करूणा और पैगम्बर जैसा प्यार था तो शंकर जैसा क्रोध भी था। डॉ0 लोहिया अन्यायियों,

सत्ताधारी शासकों के लिए आतंक थे किन्तु गरीबों के हिमायती, शक्तिहीनों की शक्ति, बेजुबान लोगों की वाणी थे। वे एक साधारण मानव होते हुए भी महामानव थे। सुख–दुःख, करूणा, क्रोध, प्यार , अपमान, दर्द सभी का सामंजस्य था उनके व्यक्त्वि में। डॉ0 लोहिया के व्यक्त्वि की इन्हीं विशेषताओं और नेतृत्व की क्षमता ने ही उन्हें भारत का महान नेता बनाया था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक बहादुर, दबंग, विद्वान के साथ मानवता के अधिकार के सत्य और प्रतीक के रूप में डॉ0 लोहिया सदैव स्मरण किये जायेंगे उन्होंने अपने व्यवहार से यह प्रमाणित किया था। कि वे मनुष्य होने के अधिकारी हैं। आज के सन्दर्भ में हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार देश पर चारो ओर प्रजातंत्र पर खतरा मढ़रा रहा है तब डॉ0 लोहिया जैसे कर्तव्यनिष्ठ ईमानदार निर्भीक, साहसी, जुझारू, संघर्षशील, दूरदर्शी नेता की आवश्यकता है क्योंकि डॉ0 लोहिया ने अपनी मृत्यु से पूर्व कहा था कि मेरे मरने पर रोना मत, मेरे सपनों को पूरा करना और आज वह समय आ गया है जब डॉ0 लोहिया के सपने पूरे करने होगें।

यद्यपि डॉ0 लोहिया के समाज–दर्शन पर कई ग्रंथ लिखे जा चुके हैं, लेकिन यह भी वास्तविकता है कि ''आज की युवा पीढ़ी अभी भी लोहिया से दूर है। वे विद्रोही युवा पीढ़ी तैयार करना चाहते थे। लेकिन आज जो पीढ़ी तैयार हुई है, उसके भीतर सामाजिक अन्याय को लेकर कहीं कोई विद्रोह नजर नहीं आता क्योंकि उसे डॉ0 लोहिया का पाठ पढ़ने नहीं दिया गया। आज जिस आधुनिकता के अंधे दौर में हम शामिल हैं वह समस्या ही ज्यादा पैदा कर रहा है, सुकून नहीं दे रहा। डॉ0 लोहिया ने जिस समाज दर्शन की बात की थी वह मानवता को सुकून देने वाला था। डॉ0 लोहिया ने भौतिक समाजवाद की बात कही, राजनीतिक समाजवाद की बात कही, आर्थिक समाजवाद की बात कही, संवादपरक राजनीति की बात कही, लेकिन हमने सब कुछ भुला दिया। आज हमने अपने आपको पूंजीवाद, साम्यवाद और व्यक्तिवाद के बीच फंसा लिया हैं। इन तीनों से जब हम मुक्त होंगे तभी डॉ0 लोहिया के संकल्प पूरे होंगे।

डा0 लोहिया का मानना था कि 40 वर्ष से कम उम्र के लोगों को सत्ता की राजनीति में नहीं पड़ना चाहिए लेकिन सत्ता को खुले सांड की तरह समाज को चरने–खाने के लिए छोड़ भी नही देना चाहिए। युवाओं को सत्ता के संदर्भ में लगाम की भूमिका निभाने की क्षमता रखनी चाहिए। डा0 लोहिया कहते हैं, ''समाज और सरकार जब सड़ते जाते हों तब विद्यार्थी का धर्म है कि उन्हें सुधारने का प्रयत्न करें। एवं ऐसे प्रयत्न प्राप्त कष्ट भी सहना चाहिए। डा0 लोहिया का कहना था कि अच्छा काम करने पर भी बदनामी क्यों होती है ? क्योंकि बुरा काम करने वाले जो चाहे समझ या ईमानदारी की कमी के कारण बुराई करते हैं ,नाराज हो जाते हैं । डा0 लोहिया कहते हैं । '' दिमाग के निर्माण के लिए आंदोलन , जुलूस , आम–सभा बगैरह– बैठक तथा न्याय– सभाऐं। विचार बैठक और न्याय सभाओं में फर्क है। आज छात्र राजनीति में तीन दोष भयंकर रूप से प्रवेश कर चुके हैं । भारतीय छात्र राजनीति इन दोषों के कारण डेंगू के मरीज जैसी हो गई है जिसमें जीवन बढाने वाले रक्ताणु घटते चले जा रहे हैं । ये तीन दोष हैं सत्ता की वासना,जातिवाद और सांप्रदायिकता अपराधीकरण । अपराधीकरण या दबंगई छात्र राजनीति का सारांश बनता जा रहा है । जिसके कारण प्रो0 सब्बरवाल की हत्या जैसी घटनाएं होती हैं । चुनाव जीतने वाले की हत्या कर देना छात्र संघ के बजट का कोई हिसाब नही रखना छात्र संघ के पदाधिकारी की तख्ती लगाकर गाडियो पर घूमते हुए शहर के उद्योगपतियो और उद्यमियो से पैसा वसूलना यहां तक कि विश्वविद्यालय की अपनी संपत्ति की खरीद फरोख्त और ठेकेदारी में हिस्सेदारी या दलाली करना आज के नेताओ की

पहचान बन गई है यह छात्र राजनीति का बिल्कुल नकारात्मक चेहरा है। जबकि आधुनिक इतिहास पर नजर डाले तो पायेंगे कि उसमें छात्र राजनीति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। फ्रांस के छात्र आंदोलन से लेकर म्यांमार के छात्र आंदोलन तक छात्र राजनीति की रचनात्मक एंव परिवर्तनकारी भूमिका देखी जा सकती है । छात्रो ने गांधी ,लोहिया और जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में तो बढ चढकर भाग लिया ही है छात्रों द्वारा संचालित आंदोलनों की अलग से निर्णायक भूमिका भी रही है गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में छात्रों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। बड़ी बड़ी पार्टियो ने छात्र राजनीति को अपना गुलाम बना लिया है स्वतंत्रता केवल बाजार के हाथों खेलने की है। सर्वोच्च न्यायालय में जो गुहार लगाई गई और उससे जो लिंगदोह समिति बनी उसने पूरे देश के छात्र संघों की व्यवस्था को मृतप्राय कर दिया है इससे बडी विडम्बना क्या हो सकती है कि लोकतंत्र के तीनों अंग कार्यपालिका विधायिका और न्यायपालिका न सिर्फ छात्र संघों को खत्म करने की मुहिम में शामिल है बल्कि उसकी अगुवाई कर रहे हैं । जिस तरह से छात्र संघों और छात्र राजनीति को खत्म करने की संगठित मुहिम चलाई जा रही है वह लोकतांत्रिक प्रक्रिया और मूल्यों के बिल्कुल विपरीत है क्या छात्रसंघों और छात्र राजनीति में अपराधियों लफंगों जातिवादी सांप्रदायिक क्षेत्रवादी तत्वों का बढ़ता दबदबा उन्हें खत्म करने के वाजिब कारण माना जा सकता है ? क्योंकि अगर छात्रसंघों और राजनीति के अपराधीकरण और भ्रष्टाचार को उन्हे खत्म करने का पर्याप्त कारण मान लिया गया तो हमें विधायिका संसद और विधानसभा के साथ साथ लोकतांत्रिक राजनीति को भी भंग और प्रतिबंधित करना पड़ेगा। छात्र राजनीति में जो भटकाव आया है उसमें सबसे बडा दोष भारतीय राजनीति में डा0 लोहिया के प्रभाव स्वरूप राष्ट्रीय और राष्ट्र स्तर के नेता बने लोहिया वादियों का है। उत्तर प्रदेश और बिहार में डा0 लोहिया के दिखाये रास्ते से राजनीति में प्रवेश करने वालों की तूती बोलती है । हिन्दुस्तान की संसद में छात्र संघों के विषय में एक घण्टे की भी बहस नही होती । जबकि लगभग 100 सांसद ऐसे हैं जो छात्र संघों से निकले हैं और वे सत्ताधारी और विपक्षी दलों के अगली कतार के नेता व प्रवक्ता हैं। जयपाल रेडडी और आनन्द शर्मा से लेकर अरूण जेटली ,शरद यादव ,सीताराम येचुरी और भी अनेकों नाम हैं । हर दल में कई अच्छे और बड़े नेता तो छात्र राजनीति के गर्भ से ही निकले हैं लेकिन जैसे मध्यम वर्गीय स्त्री पुरूष अपनी मॉ की उपेक्षा करने के दोषी दिखाई पड़ते हैं । वैसे ही छात्र राजनीति के गर्भ से पैदा ये नेता अपनी बाद की पीढ़ी को राष्ट्रीय राजनीति के आदर्शवादी के रास्ते पर जाने से रोक रहे हैं । नतीजा यह है कि आज युवा शक्ति राजनीति में अपराध और तस्करी के रास्ते से आ रही है। जातिवाद और संम्प्रदायिकता के रास्ते में आ रही है अब ये तय हमें करना पड़ेगा कि डा0 लोहिया के रास्ते पर वापस लौटा जाये या जो आत्महत्या का रास्ता है इस पर ही हम नई पीढ़ी को धकेलते चले जायें। डॉ0 लोहिया ने विद्यार्थियों को जो विचार गोष्ठी के लिए जो विषय दिये हैं वे आज और भी ज्यादा प्रासंगिक हैं ।

यद्यपि जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी, जनेश्वर मिश्रा, राजनरायण सिंह, चन्द्रशेखर सिंह, मधुलिमये, मोहन सिंह, मुलायम सिंह यादव आदि मूर्धन्य राजनीतिज्ञों के बाद उत्तर प्रदेश के वर्तमान समाजवादी पार्टी के युवा मुख्यमंत्री मा0 अखिलेश यादव जी क्या डॉ0 लोहिया के सिद्धान्तवादी एवं व्यवहारवादी राजनीति को जिन्दा रख पायेगें ? जबकि वर्तमान में भ्रष्ट सत्ता की राजनीति है और वह भी अस्थिर तथा चरित्रहीन। कौन किसका विरोधी है आज यह पता नही चल सकता, यह राजनीति का घोर संक्रमणकाल है। हॉलाकि पूर्ण बहुमत में

उ0प्र0 में समाजवादियों की सरकार है, वरिष्ठ साहित्यकार गिरिराज किशोर इस पर लिखते हैं कि वर्तमान सरकार से यह आशा तो नही की जा सकती है कि वह खांटी समाजवादी सरकार बन कर उभरेगी जैसे कि कांग्रेस ही कहां गांधीवादी बन पायी या ब0स0पा0 ही कितनी अम्बेडकरवादी बन पायी है। केवत मूर्तियाँ लगा देना ही उनके सिद्धान्तों पर चलना नहीं माना जा सकता । पर उत्तर प्रदेश के नये युवा मुख्यमंत्री नयी शुरूआत कर रहे हैं इसलिए क्या यह संभव है कि वह डॉ0 लोहिया जी की मान्यताओं और सिद्धान्तों पर गौर करेगें।

उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनावों में समाजवादी दल की विजय ने अचानक डा0 राममनोहर लोहिया की विचारधारा का स्मरण करा दिया। इसी के साथ अनेकों अनेक प्रश्न मस्तिष्क में उठने लगे हैं कि क्या प्रान्त में बनने वाली सरकारें डॉ0 राममनोहर लोहिया जी के सिद्धान्तों को व्यवहारिक रूप दे पाऐंगीं ? क्या उनकी कथनी और करनी डॉ0 लोहिया के समान होगी ? क्या वो अपने दागी व निरंकुश मन्त्रियों और कार्यकर्ताओं के प्रति डॉ0 लोहिया जैसा नैतिक बल दिखा सत्ता से बाहर कर पायेंगे ? क्या प्रशासकों की नियुक्तियों में प्रतिभाशाली लोगों का चयन कर पाएंगें ? यद्यपि उनकी डगर जटिल है परन्तु प्रदेश की जनता की आशाएं भी अनन्त हैं। डॉ0 राममनोहर लोहिया के विचार और संकल्प से उपजा उनका चिंतन, समाज को कुछ देने की और त्याग की भावना, जिससे युवाओं को निरंतर प्रेरणा मिलती थी और लोगों के मन को छू जाती थी । आज ऐसे ही व्यक्तित्व की आवश्यकता है जो देश के युवाओं को प्रेरणा दे। वास्तव में लोहिया जी के विचार और चिंतन आज भी प्रासंगिक हैं और भविष्य में भी रहेंगे। आवश्यकता है उनके विचार और चिंतन पर शिद्दत के साथ मनन और गौर करने की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- लोहिया डॉ0 राममनोहर – डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण : 1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमार आनन्द, कुमार,मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम मनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- शरद ओंकार (संपादक)–समता और

संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996

❖ कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009

❖ शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011

❖ पाठक नरेन्द्र–कर्परी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032, प्र सं .2008

❖ दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013